## ११.कृषक गान

**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**
**(१) संजाल पूर्ण कीजिए:**
**कवि की चाह**
**उत्तर :** (१) कृषक की संतोष की भावना और अभिमा पर मान करना
(२) मनुजता के ध्वज के नीचे कृषक का आह्वान करना

**(२) कृतियाँ पूर्ण कीजिए:**
**(१) कृषक इन स्थितियों में अविचल रहता है**
**उत्तर :** १) पतझड
२) धूप

**(२) कविता में प्रयुक्त ऋतुओं के नाम**
**उत्तर :** (१) मधुमास
(२) पटझर

**(३) वाक्य पूर्ण कीजिए: (उत्तर)**
(१) कृषक कमजोर शरीर को **पत्तियों से पालता है।**
(२) कृषक बंजर जमीन को **अपने खून से सींचकर उर्वरा बना देता है।**

**(४) निम्नलिखित पंक्तियों में कवि के मन में कृषक के प्रति जागृत होने वाले भाव लिखिए :**
**उत्तर :**

| **पंक्ति** | **भाव** |
|---|---|
| १. आज उसपर मान कर लो | अभिमान |
| २. आह्वान उसका आज कर लूँ | मानवता |
| ३. नव सृष्टि का निर्माण कर लूँ | सृजनशीलता |
| ४.आज उसका ध्यान कर लूँ। | आदर |

**(५) कविता में आए इन शब्दों के लिए प्रयुक्त शब्द हैं: (उत्तर :)**
(१) निर्माता - **सृजक**
(२) शरीर – **तन**
(३) राक्षस - **असुर**
(४) मानव - **मनुजता**

**(६) कविता की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।**
**उत्तर:** कृषक के अभावों की कोई सीमा नहीं है। परंतु वह संतोष रूपी धन के सहारे अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। पूरे संसार में कैसा भी वसंत आए, कृषक के जीवन में सदैव पतझड़ ही बना रहता है। अर्थात ऋतुएँ बदलती हैं, लोगों की परिस्थितियाँ बदलती हैं, परंतु कृषक के भाग्य में अभाव ही अभाव हैं। ऐसी दयनीय स्थिति के

बावजूद उसे किसी से कुछ माँगना अच्छा नहीं लगता। वह हाथ फैलाना नहीं जानता। कृषक को अपनी दीन-हीन दशा पर भी नाज है। मैं ऐसे व्यक्ति पर अभिमान करना चाहता हूँ। कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

**(७) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :**
**(उत्तर)**
**रचनाकार कवि का नाम :** दिनेश भारद्वाज।
**रचना का प्रकार :** गान।
**पसंदीदा पंक्ति :** हाथ में संतोष की तलवार ले जो उड़ रहा है।
**पसंदीदा होने का कारण :** अनगिनत अभावों के होते हुए भी कृषक के पास संतोष रूपी धन है।
**रचना से प्राप्त प्रेरणा :** कृषक दिन-रात परिश्रम करके संपूर्ण सृष्टि का पालन करता है। हमें उसके परिश्रम के महत्त्व को समझना चाहिए। उसका सम्मान करना चाहिए।